भारत का कृषि जलवायविक प्रदेश
Agro Climatic Region of India

बोलेन्द्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक भूगोल,
राजा सिंह कॉलेज सिवान

गतांक से आगे.....

8. अरावली मालवा पठार

इस प्रदेश का विस्तार मध्यप्रदेश के पश्चिम भाग तथा राजस्थान के पूर्वी भाग में है । यहां 50-100 सेमी औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त होती है । यह वर्षा अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी से उठने वाले मानसून की दोनों शाखाओं द्वारा होती है । इस प्रदेश के दक्षिण-पश्चिमी भाग में रेगुर / काली मिट्टी पाई जाती है । कपास, सोयाबीन, मक्का, मोटे अनाज और दालें खरीफ की फसलें हैं जबकि गेहूं, तिलहन, चना आदि रबी की फसलें हैं । यहां सिंचाई के साधनों का विशेष विकास नहीं हो पाया है और फसलों को मानसूनी वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता है ।

9. महाराष्ट्र का पठारी प्रदेश

महाराष्ट्र के पठारी भाग तथा मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग से बना यह प्रदेश काली मिट्टी की मोटी परत से ढका हुआ है । यहां वर्ष भर ऊंचा तापमान रहता है और जनवरी माह में भी 20°C से नीचे नहीं गिरता । यह प्रदेश पश्चिमी घाट की वृष्टि छाया में स्थित है । इस कारण से यहां अधिक वर्षा नहीं हो पाती है और औसत वार्षिक वर्षा 50-75 सेमी तक होती है । सिंचाई की अधिक सुविधा ना होने के कारण फसलों को वर्षा पर ही निर्भर रहना पड़ता है । यहां की मुख्य फसलें कपास, दालें, तिलहन, गेहूं, चना, सोयाबीन, मक्का तथा बाजरा है । सिंचित क्षेत्रों में गन्ने की कृषि की जाती है । यहां के प्रमुख फल केला, अंगूर, संतरा आदि हैं ।

10.अंतर पर्वतीय दक्कन प्रदेश

यह प्रदेश कर्नाटक राज्य के अधिकांश भाग, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु उच्च प्रदेश-उत्तर में आदिलाबाद जिले से दक्षिण में मदुरै जिले तक विस्तृत है । यहां तापमान अधिक तथा वर्षा कम होती है जिससे प्राय: सूखे की स्थिति बनी रहती है । सिंचाई व्यवस्था भी अविकसित अवस्था में है । यहां मुख्यतः लाल मिट्टी पाई जाती है जिस पर मोटे अनाज जैसे रागी, चावल, कपास, मूंगफली और दालों की कृषि की जाती है ।

11.पूर्वी तट

पूर्वी तट के साथ-साथ उत्तर पूर्व में बालासोर जिले से दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैला हुआ है । इसका निर्माण महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी नदियों द्वारा निक्षेपित कांप से हुआ है । यहां वर्ष भर तापमान ऊंचा रहता है । शीत तथा ग्रीष्म ऋतु का तापमान क्रमश 20-29°C तथा 28-38°C होता है । इस के उत्तरी भाग में दक्षिण-पश्चिम मानसून द्वारा ग्रीष्मकालीन वर्षा तथा दक्षिण भाग में उत्तर-पूर्वी मानसून द्वारा शीतकालीन वर्षा होती है । यहां चावल मुख्य फसल है और वर्ष में चावल की दो फसलें प्राप्त होती है । उड़ीसा के तट पर पटसन प्रमुख नकदी फसल है । आंध्रप्रदेश के तट पर तंबाकू मुख्य नकदी फसल है । अन्य फसलों में केला, नारियल, सुपारी तथा खट्टे-मीठे फल उल्लेखनीय है ।

12. पश्चिमी तट

इसमें महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा केरल के पश्चिमी तटीय भाग सम्मिलित हैं । यहां अरब सागर से उठने वाली दक्षिण-पश्चिम मानसून पवन सीधे पश्चिमी घाट से टकराती है और भारी वर्षा करती है । इस प्रदेश में 200 सेमी से अधिक वर्षा हो जाती है । जनवरी में तापमान 19-28°C होता है जो जुलाई में बढ़कर 26-32°C हो जाता है । उपजाऊ घाटियों तथा तट के साथ समतल मैदान से युक्त इस प्रदेश में चावल सबसे महत्वपूर्ण फसल है । नारियल, कहवा, चाय भी महत्वपूर्ण फसलें हैं । इसके अतिरिक्त मसाले और काजू भी पैदा किए जाते हैं ।

13. गुजरात प्रदेश

अपनी विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों के कारण गुजरात का अद्भुत कृषि जलवायु संबंधी व्यक्तित्व है । इसका तटीय भाग आर्द्र है जहां 100 सेमी वार्षिक वर्षा हो जाती है परंतु इसका आंतरिक भाग अपेक्षाकृत शुष्क है जहां 40-50 सेमी वार्षिक वर्षा होती है । अधिकांश इलाकों में हल्की कांप मिट्टी परंतु कुछ इलाकों में काली मिट्टी भी पाई जाती है । ये मिट्टियां मूंगफली, कपास तथा गेहूं की खेती के लिए बड़ी लाभप्रद है । गेहूं की उपज बढ़ाने के लिए उन्नत बीजों (HYV) का प्रयोग किया जाता है । सिंचित क्षेत्रों में रबी के मौसम में गेहूं की फसल हो जाती है । कच्छ के रन में कृषि उत्पादन कम होता है क्योंकि यह शुष्क इलाका है और सिंचाई की उचित व्यवस्था नहीं है ।

14. पश्चिमी राजस्थान

इसमें राजस्थान का पश्चिमी भाग आता है जो मारवाड़ के मरुस्थल तथा मेवाड़ की अरावली पहाड़ियों में विस्तृत है । अधिकांश क्षेत्र में बालू मृदा का निक्षेप है और स्थलाकृति बालू डिब्बों से युक्त है । जोधपुर बेसिन पर लूनी नदी का विछिन्न प्रवाह है । लोगों का मुख्य व्यवसाय पशुचारण है । यहां पर पशुधन लोगों की आर्थिक समृद्धि का मापदंड है । भेड़, बकरी और ऊंट मुख्य पशु है । इन पशुओं से दूध, ऊन, खालें, खाद आदि प्राप्त होते हैं । ऊंट भार ढोने का काम भी करता है । इंदिरा गांधी नहर बन जाने से इस प्रदेश को सिंचाई की सुविधा प्राप्त हो गई है और कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई है ।

15. अंडमान व निकोबार एवं लक्ष्य दीप समूह

बंगाल की खाड़ी में अंडमान व निकोबार दीप समूह तथा अरब सागर में लक्षद्वीप है । ये द्वीप चारों ओर से समुद्र द्वारा घिरे हुए हैं जिस कारण यहां पर जलवायु सम है । यहां पर तापमान 23-31°C तक होता है । वार्षिक वर्षा 200 सेमी होती है । वर्ष भर सापेक्षिक आर्द्रता 80% बनी रहती है । सालों भर गर्मी का मौसम बना रहता है और शीतऋतु अनुभव नहीं की जाती । यहां पर मुख्यत: उष्ण कटिबंधीय फसलें उगाई जाती है जिनमें मसाले, नारियल, चावल, मक्का, तिलहन और दालें प्रमुख हैं । रेशम के कीड़े पालने, मत्स्य तथा जल संसाधनों का सदुपयोग करने की बड़ी संभावनाएं हैं । जलवायु उष्णार्द्र होने से मच्छर बहुत होते हैं जिससे मलेरिया बुखार की समस्या बनी रहती है । इससे किसानों की कार्यक्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है ।

.....समाप्त

- सन्दर्भ: TMH भूगोल डी० आर० खुल्लर, एनसीईआरटी, इन्टरनेट